पात्र

पहला दृश्य

पुरुष (श्रीचन्द)

स्त्री

दूसरा दृश्य

तीन पुरुष

एक युवक

पुरुष (श्रीचन्द)

तीसरा दृश्य

पहले दृश्य का पुरुष

दूसरे दृश्य का युवक

●

पहला दृश्य

एक मध्यवर्गीय बंगले के खाने का कमरा, जो बरामदे में पर्दे डालकर बना लिया गया है। एक बड़ा-सा साइड टेबिल, जिस पर चीनी के बरतन, प्लेट प्याले नुमायशी ढंग से रखे हैं। पास में एक छोटी मेज पर फोर्क, मवाकर ओट्स, पाल्सन बटर और आचार के दो अमृतबान सजे हैं। खाने की मेज अंडाकार है, जिसके चारों तरफ चार कुर्सियाँ पड़ी हैं। दो पर एक स्त्री और एक पुरुष बैठे हैं, पुरुष—नुपुरुष, स्त्री कुछ बोले तो पता चले, कम से कम दस मिनट से खामोश तीसरे पहर की चाय पी रही है।

स्त्री : (चाय का प्याला घुमाते हुए) तो सरदार साहब बहुत चौंके ?

पुरुष : (अनमना) हूँ·····

स्त्री : कुछ कहने के लिए साँस भरकर रह जाती है)।

पुरुष : तो आज नौकर दोनों छुट्टी ले गये हैं ?·····

स्त्री : (दो घूंट चाय पीकर रूमाल से ओठ पोंछती हुई) सरदार साहब की डाइरेक्टरों में खूब चलती है····।

पुरुष : (हास्यास्पद उत्साह से) यह ! यही तो इन कम्बख्तों को मिटा देता है। यह समझते हैं कि बहुमत उन्हें गदहे से बछड़ा बना देगा ! कमबख्त यह नहीं सम-

ऐलान कर दिया कि मैं तीन साल तक कोई डिविडेण्ड नहीं बाँटूंगा ? (भद्दी तौर से अँगूठा दिखाता है।) अँगूठा कर लो मेरा !

स्त्री चाय खत्म करके घड़ी की तरफ देखती है और भँवों में कुछ घुसपुसाती है, पुरुष बेचारा क्या समझे ! वह एकाग्र खाता रहता है। कमरे में निस्तब्धता छा जाती है।

पुरुष : (ऊबा-सा) तो आज नौकर दोनों गायब ? मेम साहब ने चाय बनायी है, पर शाम को क्या होगा ? मेरी मीटिंग शायद आठ पर खत्म होगी।

स्त्री : (रूमाल से उँगलियां मलते) मैं....मैं (सहसा) तो जा रही हूं।

पुरुष : कहाँ जा रही हो ? कहाँ ?

स्त्री : (बाहर की तरफ रूमाल हिलाते हुए)

पुरुष : (बाहर की तरफ देखता है) वहाँ ? बाजार, शापिंग के लिए ?

स्त्री : नहीं मैं तो लखनऊ जा रही हूं, आखिरी जी० आई० पी० से लौट आऊंगी।

पुरुष : (अपना आश्चर्य भरसक छिपाते हुए) लखनऊ, जी० आई० पी०, आखिर क्यों ?

स्त्री : (चाय खत्म कर चुकी है) कुछ नहीं, ऐसे ही घूमने। सरदार साहब की बीवी हैं, मिसेज निहाल हैं, मैं हूँ, मिस मित्तर हैं—उन्हीं को कुछ काम है, न जाने रेडियो लेने जा रही हैं क्या ?

पुरुष : (उँगली पोंछ रहा है) तो यह कहो (रुककर) लेकिन कार क्यों नहीं ले जातीं ?

: सरदार साहब, राजा साहब, बाबू साहब, सबके साथ यही दिक्कत है। कमबख्त जीवन की कला नहीं जानते। त्रिपनाग-से निहत्थे पाजियों की तरह यह मौत तक खिसकते जाते हैं। जब उन्होंने देखा कि मैं उनसे भीख नहीं माँगता, उनके तलवे नहीं सहलाता, ग्रह नहीं बनाता, षड्यंत्र नहीं करता तो मुंह बाकर रह गये ! जी हाँ, मुंह बाकर रह गये। (प्याला रखकर हँसता है) यह कुछ समझते-बूझते तो हैं नहीं। जब कभी इनके ठोकर लगती है, तो बस खड़े होकर मुंह बा देते हैं। (आवाज धीमी करता है) लेकिन कपड़ों के नीचे यह सब इज्जतदार मोटे घुड़मुंहे, गदहे हैं, गदहे ! हाँ व्यवस्थित समाज में इनका एक लाभ जरूर है—यह ठोकरें खूब झेल लेते हैं ! डिविडेण्ड कम हुआ, इनके हाथ-पाँव फूल गये, किसी कॉलिज के चिबिल्ले ने किताबी अंग्रेजी में स्ट्राइक की धमकी दे दी, इनके हाथ-पाँव फूल गये, यह बौखला गये। (हाथ को नाटकीय ढंग से हिलाते हुए) मैंने साफ

स्त्री : नहीं कार--कार नहीं। ज्यादा-से-ज्यादा जी० आई० पी० से लौट आएंगे। वही शायद आखिरी गाड़ी है।

पुरुष : (जेब से सोने की जेब-घड़ी निकालकर और उसे वास्केट पर पोंछकर) तो जी० आई० पी० यहाँ आती है १० २५ पर, तुम यहाँ १०-२५ पर आ जाओगी। कार मैं पम्प पर छोड़ दूंगा—अरे मिलखी राम के पेट्रोल-पम्प पर। खाने के लिए यह करना कि कार में टिफिन-केरियर रख लूंगा, तुम स्टेशन से सालन बगैरा ले आना; न होगा रोटियाँ यहीं बन जाएंगी (जेब में घड़ी रख लेता है और जेबें टटोलकर सस्ता सिगरेट–केस निकालता है और एक सिगरेट जलाता है। धुआँ छोड़ते हुए) अब सरदार साहब के मिजाज ठिकाने आ जाएँगे। कोई उसूल नहीं, कोई हौसला नहीं। भला इसे जिन्दगी कहते हैं?

स्त्री : तो जी० आई० पी० यहाँ साढ़े दस पर आती है?

पुरुष : (फिर घड़ी निकाल लेता है और फिर उसे पोंछता है) नहीं १०-१५ पर। और जी० आई० पी० की गाड़ियाँ लेट नहीं होतीं—यह ई० आई० आर० नहीं है। (जैसे कोई अपनी ही चीज का बखान कर रहा हो) दुनियाँ का भविष्य उचित समय पर उचित काम करनेवालों के हाथ में है—दुनिया की सारी दौलत, सारा आराम, सारा जस उसका है, जो अपनी जगह पर कायम है और काम का जो छोटा हिस्सा उसका है, उसे मशीन की तरह पूरा कर रहा है। अमरीका का एक बहुत बड़ा लेखक बरनार्ड शॉ, उसने कहा है....

स्त्री (सहसा ऊबी-सी) मिसेज निहाल ने कहा तो था कि

वह अपनी कार भेजेंगी। तुम्हें मीटिंग में कब जाना है ?

पुरुष : (चौंककर घड़ी की तरफ देखता है) साढ़े चार ! तो लो मैं चला--(गुनगुनाता है)--चार बजकर सत्रह--तीन या चार मिनट मुझे ड्यूक कम्पनी में लगेंगे, चार-इक्कीस—खैर, तो चलो, तुम्हें पिंडी के यहाँ छोड़ दूँगा, वहाँ से····या आओ निहाल के यहाँ तक ! दो मिनट की ही तो बात है।

स्त्री : (अँगड़ाई लेते हुए) अच्छा ! (खड़ी हो जाती है) यही साड़ी पहने रहें या दूसरी (मुड़कर देख रही है !) पहन लें।

पुरुष : (सिगरेट दो-तीन बार चूसकर फेंकते हुए जैसा तुम्हारा जी चाहे, लेकिन तुम्हें मेरे सर की क़सम, बतला, दो लखनऊ में क्या है ?

स्त्री : (बरबस मुस्कराती हुई) लखनऊ में ? बहुत-सी चीज़ें, छोटा-बड़ा इमामबाड़ा, चिड़ियाघर, हजरत-गंज, अमीना·····

पुरुष : नहीं, मैं पूछता हूँ, आज शाम को कोई खास बात ?

स्त्री : (जाते हुए) आज शाम को खास बात ? कोई खास बात नहीं है।

पुरुष : (जैसे एक बड़ी मुहिम के लिए तैयार होते हुए) यहाँ आओ, यहाँ बैठो, (स्त्री घूमकर खड़ी हो जाती है) बैठो, मैं देखता हूँ, तुम कुछ दिनों से ऐसी ही हो रही हो। मैं जानता हूँ, तुम्हारी यहाँ तबीयत नहीं बहलती, पर छुट्टियों में निर्मल आ जायगा, मोनी भी शायद यहीं आये। तुम्हें मालूम हुआ, मोनी अबकी बी० ए० में फ़र्स्ट रही। लेकिन हाँ, बताओ

यह तुम्हें हुआ क्या है ?

स्त्री : होता क्या ! कुछ नहीं हुआ, तुम अगर मेरी तबीयत का एक खाका बनाओ तो लकीर वहाँ··· वहाँ बिजली तक पहुँच जाए ।

पुरुष : (उत्साहित होकर) हाँ, लेकिन फिर यह बेताबी क्यों है ? देखो आदमी के सामने बड़ी समस्या यह है कि वह अपनी बची-खुची शक्ति किस तरह काम में ले आये ? आदिम जंगलीपन से लेकर आज तक की सभ्यता तक जो कुछ भी आदमी ने अपने को दुखी या सुखी बनाने के लिए किया है, वह इस शक्ति को काम में लाने के लिए । फिर दुःख या सुख तो इतनी ठोस चीजें हैं कि एक दिन तुम देखोगी कि यह शीशियों में बिका करेंगी, शीशियों में । मुझे इन टिसुए बहानेवालों से नफ़रत है, सख्त नफ़रत ! यह सिर्फ हरैले ही नहीं हैं, यह तो अपनी हार के गीत गाते हैं, नारे लगाते हैं ।

स्त्री : अच्छा उठो, फिर तुम कार पर न पहुँचाओगे ?

पूरुष : (फिर घड़ी निकालता ओर उसे पोंछता है) असम्भव! तुम अब मिसेज निहाल का इन्तजार करो ।

पुरुष जल्दी से भीतर चला जाता है, स्त्री वहीं बाहर की तरफ घूरती हुई बैठी रहती है । थोड़ी देर में पुरुष भीतर से आता है, बगल में पुराना फेल्ट-हैट दाबे हाथ के छोटे डण्डे को रूमाल से पोंछ रहा है ।

पूरुष : १०-१५ पर तुम स्टेशन आ जाओगी, वहाँ से मिलखी-राम तक का रास्ता है ५ मिनट का, १०-१०, यानी

१०-३० तक तुम यहाँ होगी, यानी १०-४० तक हम तुम यहीं इसी टेबिल पर डिनर के लिए बैठे होंगे। मैं स्टेशन आ जाता, लेकिन मिस मित्तर से तुम व्यर्थ जलोगी। (भद्दी हँसी हँसता है, स्त्री पर जैसे इसका कोई असर नहीं होता) अच्छा, चीरिओ !

सीढ़ियों पर से तेज़ी से उतरता हुआ चला जाता है। स्त्री वैसे ही बैठी रहती है, फिर अनमनी भीतर उठकर चल देती है। स्टेज पर एकबारगी अंधकार हो जाता है। बीच में दो बार रोशनी होती है, जिसमें पूरे सीन में खाली मेज़ और कुर्सियाँ दिखलायी देती हैं। घड़ी—जिसमें पहले ८-२० बजा है फिर ९।

दूसरा दृश्य

एक मध्यवर्गीय क्लब का कमरा, तेज तीखी रोशनी हो रही है। मेजों पर ताश भरी हुई एश-ट्रे बिखरी हैं, कुर्सियाँ भी अनेक चारों तरफ तितर-बितर पड़ी हैं। कोने में एक बड़ी फ्रेंच-विण्डो (खिड़की) के सामने सोफों पर तीन आदमी बैठे हैं। सीन में सिर्फ उनकी पीठें दिखायी दे रही हैं। पास ही एक कुर्सी पर सामने की छोटी मेज पर सुरुचि से कपड़े पहने एक युवक बराबर ताश फेंट रहा है। खिड़की के फ्रेम

में तारों से खिला हुआ आकाश तस्वीर की तरह जड़ा हुआ है। दीवार की बड़ी घड़ी ८-४५ बजा रही है। कमरे में सब खामोश हैं, पर निस्तब्धता नहीं है।

पहला : (आवाज वृद्ध सी है) न मालूम यह मनहूस ब्रिज का खेल क्यों खेलता हूँ ?

दूसरा : (जम्हाई लेता हुआ) क्या किया जाए, आओ कोई और झंडा ऊँचा करें।

तीसरा : यह लोग आते भी तो नहीं। (कुर्सी पर के युवक की तरफ घूमकर) देखो जी, तुम मिश्रित समाज की चर्चा चलाओ···

दोनों आदमी घूमकर युवक की तरफ देखते हैं। तीनों आदमी मोटे-अधेड़, कीमती कपड़े पहने और अत्यन्त असन्तुष्ट हैं।

युवक : (झेंपता-सा) मैं कैसे उठा सकता हूँ ? हाँ, मेरी पत्नी आती तो मैं जरूर ऐसा करता। देखिए उन्हें....

[तीनों एकबारगी 'हूँ' कहते हैं और फिर मुड़के बैठ जाते हैं और खामोश हो जाते हैं। युवक फिर ताश फेंटने लगता है।]

पहला : (जेब से सिगरेट-केस निकालता है और फिर रख लेता है) चलो भाई चलें, मुझे तो सुबह से ही काम है।

दूसरा : (मुड़कर घड़ी देखते हुए) यह श्रीचन्द बुत्ता दे गया !

पहला : नहीं भाई, कहीं फँस गया होगा। उसके तो मकड़ी की तरह सौ आँखें हैं।

युवक : वह आएँगे जरूर; मेरी तो दावत कर गये हैं।

तीनों : (मुड़कर) अच्छा ! और पट्ठे की पत्नी आज है नहीं ?

[सब एक-दूसरे की ओर देखते हैं]

युवक : अच्छा ! मुझे पता होता तो मैं कभी प्रतीक्षा न करता ।

पहला : इसे—श्रीचन्द को देखो, जब वह वकालत छोड़कर व्यापार में आ रहा था, मुझे इसकी सफलता की तनिक भी आशा न थी, पर देखो—आज वह एक कम्पनी का सर्वेसर्वा बन गया है । (हँसता है)

दूसरा : (जम्हाई लेता और अँगूठियों वाली अँगुली से चुटकियाँ बजाता है) मैं तो भाई दिन-ब-दिन मानता जाता हूँ कि भाग्य भी कोई चीज है ।

युवक ताश रखकर एकाग्र हो, इन लोगों की बातें सुनता है ।

तीसरा : (उठ खड़ा होता है) आओ भाई, चलो । आइए मिस्टर सहाय, आपको कार पे छोड़ आऊँ घर तक....

पहला : बैठो न, श्रीचन्द आता ही होगा ।

युवक : और आपसे भी तो उन्होंने कार में छोड़ आने के लिए कहा था ।

तीसरा : (बैठते हुए) हूँ, हूँ, तब तो रुकना ही पड़ेगा ।

[युवक कोई भी बात शुरू करने का इरादा करता है ।]

युवक : आज मेरठ षड्यन्त्र का मामला शुरू हो गया ।

तीनों : क्या ? अच्छा !

तीनों ऐसी बातों की तरफ उदासीनता दिखलाना चाहते हैं, पर कुछ असफल से हो रहे हैं ।

पहला : श्रीचन्द ने इनके बारे में खूब कहा ! (हँसता है ।

सब उसकी तरफ देखकर सुनना चाहते हैं।

पहला : (कोट का कालर ठीक करते हुए) मेरे साथ कमिश्नर से मिलने गया, उन्होंने मेरठ की बात चलायी। आप छूटते ही हिन्दुस्तानी में बोले—अरे साहब, इनको तो ऐसे ही छोड़ देना चाहिए, यह तो हम लोगों के खिलौने हैं।

तीनों फैशनेबल हंसी हंसते हैं, युवक भी उसमें शामिल होता है।

दूसरा : हर देश, हर सरकार के सामने समस्या सिर्फ यही है कि किस तरह उसके कर कम-से-कम किए जा सकते हैं। आप कर कम कर दीजिए, प्रजा अपने-आप सम्पन्न होगी।

पहला : हम लोगों-सा कोई बेसरोकार आदमी रूस जाकर देखे कि इन शरीफों ने वहां क्या कर दिखाया है कि दुनिया भर को रूस के सामने हेय समझते हैं।

तीसरा : यानी खुदा तक को !

फिर तीनों ऊबी-सी हंसी हंसते हैं। बाहर कुछ खटका होता है। सब लोग बाहर की तरफ देखते हैं। पहले दृश्य का पुरुष संतोष और लापरवाही से आता है।

पुरुष : (अपना हैट और डंडा एक खाली मेज पर रखते हुए) तो तुम लोग मेरा इन्तजार कर रहे थे ! ब्रिज खत्म कर दिया ?

दूसरा : (कमरे के बीच में आते हुए) आज सहाय फिर हार गये।

पुरुष : (हंसता हुआ) सहाय, तुम बड़े हरैले हो !

अब सब अपनी जगहों से उठकर कमरे

के बीच में आ गये हैं।

पहला पुरुष : जीत तो सब तुम्हारे हिस्से में पड़ी है।

: अरे भाई, क्या जीत क्या हार ? यहाँ तो इसका कभी सपने में भी ख्याल नहीं करते। हम तो ईमानदारी से जीना चाहते हैं। मैं फिर कहता हूँ, जीवन एक कला है और सबसे बड़ी कला !

दूसरा : (जम्हाई लेते हुए) चलो भाई, बड़ी देर हो गई। (सब घड़ी की तरफ देखते हैं, पुरुष फिर अपनी सोने की घड़ी निकालता है और उसे पोंछता है) चलो, घर तक छोड़ना पड़ेगा।

तीनों भीतर जाकर अपना हैट लेते हैं, केवल युवक नंगे सिर है।

पहला : यह चौकीदार न जाने कहाँ मर गया है !

दूसरा : कहता है ? क्या खूब ! क्या नयी पत्नी कर लाया है ? जरा सोचो, नयी पत्नी !

सब जवानों की तरह हँसते हैं, सिर्फ युवक कुछ झेंपा झेंपा-सा है और सबसे पीछे बाहर जाता है। बाहर बरामदे से दो या तीन बार आवाज आती है 'चौकीदार !' फिर मोटरों के स्टार्ट होने की और फिर खामोशी। स्टेज पर अँधेरा हो जाता है, पर बीच में दो या तीन बार रोशनी होती है और किसानों का-सा बुझा हुआ चेहरा लिये एक चौकीदार मेज झाड़ता और जले हुए सिगरेट बीनता हुआ दिखायी देता है।

तीसरा दृश्य

पहले सीन के कमरे का बरामदा, लम्बा और साधारण से जरा ऊंचा। खम्भों के पास बड़े-बड़े पाम खड़े हैं, खम्भों पर बेलें भी फैली हैं। दरवाजे सब बन्द हैं, जिनके सामने तीन-चार बेमेल कुर्सियां पड़ी हुई हैं। सीढ़ियों पर एक बड़ा झबरा कुत्ता लेटा है। दृश्य के शुरू में कोई आदमी नहीं दिखाई देता है, पर तत्काल ही गृहस्वामी और युवक, जो क्लब से आ रहे हैं, सीढ़ियों पर चढ़ते दिखाई देते हैं। कुत्ता सिर उठाकर धीमी जानकारी से गुर्राता है, फिर पूंछ हिलाता हुआ पीछे-पीछे दौड़ता बरामदे में लौट जाता है। स्टेज पर कम-से-कम रोशनी है।

पुरुष : (मेहनत से चढ़ते हुए) तो यह कहिए ? (जेब टटोलता है) रुकिए····

पुरुष एकबारगी सीढ़ियों से उतरकर बँगले के पीछे की तरफ जाता है। युवक वहीं खड़ा होकर उसकी ओर उत्सुकता से देखकर मुस्करा रहा है। शीघ्र वह फिर वापस आ जाता है और उतावली से जेब टटोलता है।

पुरुष : अब यह नहीं पता, मेरी पत्नी चाभी मुझे दे गयी या कहीं रख गयी ? नौकर····मैं कहता हूँ कि मेरी

जिन्दगी में अगर कोई सुर बेसुरा है तो यह नौकर। छुट्टी-छुट्टी-छुट्टी, रोज-रोज इनको छुट्टी चाहिए, कम्बख्त यह नहीं जानते····

युवक सहसा एक कुर्सी खींचकर बैठ जाता है। फिर पुरुष स्विच टटोलकर बत्ती जला देता है और दूसरी कुर्सी पर ठीक युवक के सामने बैठ जाता है।

पुरुष : (एकबारगी हँसता हुआ) अगर स्विच कमरे के भीतर होता तो लुत्फ आ जाता !

युवक : खैर, यहाँ भी तो आराम से बैठे हैं।

पुरुष : शायद ९-३० बजा है, (घड़ी निकालता है और उसे पोंछता है) ९-२७, खैर, मेरी पत्नी यहाँ १०-३० तक आ जाएगी। खाना वह साथ ही लाएगी। (जम्हाई लेता है) और कहिए।

युवक : (उत्साह से) मुझे कोठी तो खैर मिल गयी····

पुरुष : (जूते को फटफटाते) खैर, कोठी-ओठी तो है, आपने यह नहीं बताया कि आपने शादी क्यों नहीं की ?

युवक : (कठिनता से) नहीं ही की—नहीं का कोई कारण तो है नहीं।

पुरुष : (मुस्कराता है) मैं सच-सच कहता हूँ, मैं आप जवान आदमियों को देखकर कई बार बहुत खुश होता हूँ।

युवक : (जैसे इसके लिए बिलकुल तैयार नहीं है) जी हाँ। (हँसता है)

पुरुष : (सम्हालकर) नहीं, मैं आपसे दिल्लगी नहीं कर रहा हूँ। आप लोग हमसे एक पीढ़ी आगे हैं, पर अगर आपसे हिसाब माँगा जाए तो आपके पास क्या है ? आप मुझे बताइए, आप लोगों ने दुनिया को क्या

दिया ? मैं वैज्ञानिक आविष्कारों की बात नहीं करता, उसकी तो एक पूरी स्कीम है, जिसमें पीढ़ियों और समाज का कोई दखल ही नहीं है, वह तो प्रकृति धीरे-धीरे अपने आप पूरा कर रही है। मैं जानता हूँ, आप मेरे विचारों को दकियानूसी समझकर मन-ही-मन हँस रहे हैं, लेकिन भाई जान, आपने कौन-से तीर मारे हैं, आप बताइए ?

युवक : जिक्र तो शादी का था ?

पुरुष : हाँ, हाँ, शादी को ही लीजिए, आप मानते हैं कि हर एक आदमी को जाति की जिन्दगी में दाखिल होना जरूरी है। जैसा मैं प्रायः कहता हूँ कि दुनिया साझे की दूकान हैं और हर एक बालिग आदमी का कर्त्तव्य है कि उसका साझेदार हो। अगर इस कोशिश में आप अपनी जान नहीं खपा देते, तो आप मनुष्य कहलाने का कोई हक नहीं रखते। (उत्तेजित होकर) मैं कहता हूँ, सब पुस्तकें गलत हैं, सब झूठी हैं।

युवक : मैंने तो शादी नहीं की—नहीं की कि मैं शायद कभी भी औरत का दिमाग····

पुरुष : भाईजान, शादी एक गहरी समस्या है, आप उसके साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। मैं पूछता हूँ, आप एक फैक्ट्री में तो हर तरह का विज्ञान, कानून, विशिष्ट ज्ञान लगाते हैं, फिर क्या कारण है कि जीवन को ऐसे परमात्मा के भरोसे छोड़ दिया जाए कि उसमें आदमी की सस्ती-से-सस्ती और निकम्मी से-निकम्मी शक्तियाँ ही सिर्फ काम में लायी जाएँ ! आप कहते हैं, मैं औरत को समझ नहीं पाता। जनाब, यह सब कोरी बातें हैं, बातें। समझने की क्या जरूरत

है ? मशीन की एक पुली दूसरी पुली को नापने, जोखने, समझने नहीं जाती। स्त्री-पुरुष तो जीवन की मशीन के दो पुरजे हैं—दो !

युवक : यह फैक्ट्री और मशीन की भी एक ही रही ?

पुरुष : नहीं साहब, आप मुझे देखिए, मेरी पहली पत्नी थी। कम्बख्त को हमेशा मुझसे शिकायत रही, लेकिन उसकी बीमारी में जब मैं प्रतिक्षण उसके सिरहाने रहा तो मेरा नाम रटती हुई मरी। अब यह मेरी दूसरी पत्नी है। हमारे बच्चे नहीं, यानी इस पत्नी के। हम लोग क्लबों में साथ-साथ नहीं जाते, हफ्ते में एक बार सिनेमा देखते हैं, पहाड़-जंगल जाने का मेरे पास वक्त नहीं, पर हम लोग बेहद खुश हैं। कभी हम में कोई भेद-भाव हुआ ही नहीं। मैं कहना चाहता था कि दोनों ने अपनी-अपनी जगह को समझ लिया है और वहाँ हम लोग अडिग हैं। वह बीमार पड़ती है, मैं डाक्टरों से घर नहीं भर देता; मैं बीमार पड़ता हूँ, वह रोती-धोती नहीं। मैं क्या कहूँ ? मैं जानता हूँ, इस वक्त मेरी पत्नी स्टेशन के बुकस्टाल पर कौन-सी किताब देख रही है। मैं जानता हूँ, वह स्टेशन पर गाड़ी से दस मिनट पहले पहुँच जाती है।

युवक : पर मान लीजिए, मशीन का एक पुरजा बिगड़ जाए।

पुरुष : (हँसता हुआ) तो पुरजा बदल डालिए, स्वयं बदल जाइए। किताब ? मैं आपको बताऊँगा, किताबें क्या हैं ? मैंने रुई के व्यापार पर एक छोटी-सी पुस्तक लिखी। वही सब बातें लिखीं, जो लोग रोज सोचते थे और जिनकी चर्चा करते रहते थे। नतीजा यह हुआ कि किताब की धूम मच गयी, पर उन्हीं उसूलों

को, जिनकी मैंने वकालत की, काम में लाने की बात मैं स्वप्न में भी नहीं सोचता।

पुरुष सहसा यह आशा करके कि युवक कुछ कहेगा, चुप हो जाता है। युवक सिर झुकाए हुए खामोश है। कुत्ता इतना शोरगुल सुनकर पास आकर खड़ा हो गया है। कुछ देर के लिए खामोशी हो जाती है।

युवक : (सिर उठाकर) फैक्ट्री, पुरजा, वाकई यह खूब रही!

पुरुष कुछ कहने के लिए तैयार होता है, पर सहसा फाटक खटकता है और कुत्ता भौंकते हुए दौड़ता है। वह कुत्ते को बुलाता है और बरामदे के किनारे खड़े होकर जोर से पुकारता है। एक चपरासी हाथ में बाइसिकल थामे आता है और सलाम करके जेब में से एक लिफाफा निकालकर देता है और सलाम करके खड़ा हो जाता है।

पुरुष : क्या है, तुम कौन हो? (लिफाफा लेकर अपनी घड़ी के चेन के चाकू से उसे खोलता है—रोशनी की तरफ जाता है।) ऐं

चपरासी : मैं निहाल साहब का ड्राइवर हूँ। मेम साहब ने कहलाया है, वह कल आएँगी।

पुरुष : (खत पढ़ना छोड़कर) कल आएँगी? ऐं! तुझे क्या मालूम?

चपरासी : सब मेम साहब वहाँ रहेंगे, मोटर वापस कर दी, मुझसे कहा···

पुरुष : (टहलते हुए उतावली से) और खाना, मकान····
और कार मेरी मिलखीराम के पम्प पर खड़ी है !

चपरासी : हुजूर, आपका कुत्ता बड़ा पानीदार है। अंग्रेजी है ?

पुरुष : (हताशा भाव से) आखिर—आखिर, हूँ····

युवक : उठते हुए) आइए, मेरे होटल में आइए, आपकी फैक्ट्री में तो आज स्ट्राइक हो गई !

पुरुष : मैं कहता हूँ, मेरी कार मिलखीराम के पम्प पर खड़ी है।

(फिर खत बत्ती के नीचे ले जाकर पढ़ता है)

•